Pitar chalisa

।। दोहा ।।

हे पतिरेश्वर आपको दे दयिो आशीर्वाद।
चरणाशीश नवा दयिो रखदो सरि पर हाथ।
सबसे पहले गणपत पाछे घर का देव मनावा जी।
हे पतिरेश्वर दया राखयिो, करयिो मन की चाया जी।।

।। चौपाई ।।

पतिरेश्वर करो मार्ग उजागर, चरण रज की मुक्ति सागर।
परम उपकार पत्तिरेश्वर कीन्हा, मनुष्य योणि में जन्म दीन्हा।
मातृ-पतृि देव मन जो भावे, सोई अमति जीवन फल पावे।
जै-जै-जै पत्तिर जी साई, पतृि ऋण बनि मुक्ति नाहि। 1 ।

चारों ओर प्रताप तुम्हारा, संकट में तेरा ही सहारा।
नारायण आधार सृष्टि का, पत्तिरजी अंश उसी दृष्टि का।
प्रथम पूजन प्रभु आज्ञा सुनाते, भाग्य द्वार आप ही खुलवाते।
झुंझनू में दरबार है साजे, सब देवों संग आप वरिाजे। 2 ।

प्रसन्न होय मनवांछति फल दीन्हा, कुपति होय बुद्धि हर लीन्हा।
पत्तिर महमिा सबसे न्यारी, जसिका गुणगावे नर नारी।
तीन मण्ड में आप बरिाजे, बसु रुद्र आदत्यि में साजे।
नाथ सकल संपदा तुम्हारी, मैं सेवक समेत सुत नारी। 3 ।

छप्पन भोग नहीं हैं भाते, शुद्ध जल से ही तृप्त हो जाते।
तुम्हारे भजन परम हतिकारी, छोटे बड़े सभी अधकिारी।
भानु उदय संग आप पुजावै, पांच अँजुलि जल रझिावे।
ध्वज पताका मण्ड पे है साजे, अखण्ड ज्योति में आप वरिाजे। 4 ।

सदयिों पुरानी ज्योति तुम्हारी, धन्य हुई जन्म भूमि हमारी।
शहीद हमारे यहाँ पुजाते, मातृ भक्ति संदेश सुनाते।
जगत पत्तिरो सद्धिान्त हमारा, धर्म जाति का नहीं है नारा।
हन्दिू, मुसलमि, सखि, ईसाई सब पूजे पत्तिर भाई। 5 ।

हन्दिू वंश वृक्ष है हमारा, जान से ज्यादा हमको प्यारा।
गंगा ये मरुप्रदेश की, पतृि तर्पण अनविार्य परविश की।
बन्धु छोड़ ना इनके चरणाँ, इन्हीं की कृपा से मलि प्रभु शरणा।
चौदस को जागरण करवाते, अमावस को हम धोक लगाते। 6 ।

जात जड़ूला सभी मनाते, नान्दीमुख श्राद्ध सभी करवाते।
धन्य जन्म भूमि का वो फूल है, जसि पतृि मण्डल की मलिी धूल है।
श्री पत्तिर जी भक्त हतिकारी, सुन लीजे प्रभु अरज हमारी।
नशिदिनि ध्यान धरे जो कोई, ता सम भक्त और नहीं कोई। 7 ।

तुम अनाथ के नाथ सहाई, दीनन के हो तुम सदा सहाई।
चारकि वेद प्रभु के साखी, तुम भक्तन की लज्जा राखी।
नाम तुम्हारो लेत जो कोई, ता सम धन्य और नहीं कोई।

जो तुम्हारे नति पाँव पलोटत, नवों सद्धि चरणा में लोटत। 8 ।

सद्धि तुम्हारी सब मंगलकारी, जो तुम पे जावे बलहिारी।
जो तुम्हारे चरणा चत्ति लावे, ताकी मुक्त अवसी हो जावे।
सत्य भजन तुम्हारो जो गावे, सो नश्चिय चारों फल पावे।
तुमह देव कुलदेव हमारे, तुम्हीं गुरुदेव प्राण से प्यारे। 9 ।

सत्य आस मन में जो होई, मनवांछति फल पावें सोई।
तुम्हरी महमिा बुद्धि बड़ाई, शेष सहस्र मुख सके न गाई।
मैं अतदीन मलीन दुखारी, करहुं कौन वधिि विनिय तुम्हारी।
अब पत्तिर जी दया दीन पर कीजै, अपनी भक्त शक्त कछु दीजै। 10 ।

।। दोहा ।।

पत्तिरों को स्थान दो, तीरथ और स्वयं ग्राम।
श्रद्धा सुमन चढ़ें वहां, पूरण हो सब काम।
झुंझनू धाम वरिाजे हैं, पत्तिर हमारे महान।
दर्शन से जीवन सफल हो, पूजे सकल जहान।।
जीवन सफल जो चाहएि, चले झुंझनू धाम।
पत्तिर चरण की धूल ले, हो जीवन सफल महान।।